Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

जनवरी/2025 ई

MONTHLY QADIAN

ANSARULLAH

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

January/2025

Date of Publication:15-01-2025

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz, Mob: 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beig, Mob: 9915223313

Annual Subscription: Rs: 250/- | Per Issue: Rs: 25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

17.11.2024 को ठटल, ज़िला ऊना (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित मुफ़्त मेडिकल कैंप का एक दृश्य ।

17.11.2024 को पंजवा, ज़िला ऊना (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित मुफ़्त मेडिकल कैंप में श्री डॉक्टर सय्यद सईद अहमद, श्री खालिद अहमद अल्लादीन क़ाइद इसारो खिदमते ख़ल्क़ दवाइयां देते हुए ।

19.12.2024 को ज़िला दवाखाना किंग कोठी हैदराबाद (तेलंगाना) में मजलिस अंसारुल्लाह हैदराबाद की ओर से मरीज़ों को कम्बल तक़सीम करते हुए जनाब तनवीर अहमद नायिब सदर अंसारुल्लाह जुनूबी हिन्द ।

19.12.2024 को ज़िला दवाखाना किंग कोठी हैदराबाद (तेलंगाना) में मजलिस अंसारुल्लाह हैदराबाद की ओर से अटेंडर को कम्बल तक़सीम करते हुए जनाब तनवीर अहमद नायिब सदर अंसारुल्लाह जुनूबी हिन्द ।

29.9.2024 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह पश्चिमी के अवसर पर हाज़िर अंसार सदस्य का एक ग्रुप फ़ोटो ।

8.9.2024 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला कोलकाता, हौरा, मेदनीपुर (पश्चिम बंगाल) के अवसर पर खेलों के प्रारम्भ का एक दृश्य ।

8.12.2024 को आयोजित तरबियती इजलास शिमोगा (कर्णाटक) के अवसर पर हाज़िर अंसार सदस्य का एक दृश्य ।

8..12.2024 को आयोजित वार्षिक इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह ज़िला कृष्णा (आंध्र प्रदेश) के अवसर पर हाज़िर अंसार सदस्य का एक दृश्य ।

19.12.2024 को ज़िला दवाखाना किंग कोठी हैदराबाद (तेलंगाना) के अधिकारी को "विश्व संकट और शांति का मार्ग" पुस्तक भेंट करते हुए अंसार सदस्य मजलिस अंसारुल्लाह हैदराबाद ।

19.12.2024 को मुंबई (महाराष्ट्र) के अधिकारियों को "विश्व संकट और शांति का मार्ग" पुस्तक भेंट करते हुए अंसार सदस्य मजलिस अंसारुल्लाह मुंबई।

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक (हिन्दी)
डाक्टर अब्दुल माजिद
09915279005

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ   نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ   وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ
سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 23 जनवरी 2025 Issue -01

विषय सुचि	पृष्ठ

दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश	3
सम्पादकीय : क़ुरआन की तिलावत और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सर्वोत्तम आदर्श	4
निवेदन - सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत साल 2025 का कार्यक्रम : उस्वा-ए-रसूल	6
कुरआन की सच्चाइयाँ और आधुनिक आविष्कारों से उनकी पुष्टि	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

दर्सुल क़ुर्आन

قرآن کریم

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ○
(الاحزاب:22)

निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में नेक आदर्श हैं प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़िरत की उम्मीद रखता है और अधिकता से अल्लाह को याद करता है।

दर्सुल हदीस

عَنْ سَعْدِ بْنِ هِشَامٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ اِنْطَلَقْنَا اِلٰى عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا فَقُلْتُ يَا اُمَّ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْبِئِيْنِيْ عَنْ خُلُقِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ اَلَسْتَ تَقْرَأُ الْقُرْاٰنَ قُلْتُ بَلٰى ۔ قَالَتْ فَاِنَّ خُلُقَ نَبِيِّ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ الْقُرْاٰنَ ۔ وَفِيْ رِوَايَةٍ كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْاٰنَ ۔ (مسلم كتاب الصلوٰة)

अनुवाद : हज़रत सअद बिन हिशाम (रज़ि.) बयान करते हैं कि हम हज़रत आयशा (रज़ि.) की खिदमत में हाज़िर हुए और मैंने अर्ज़ किया, "ऐ उम्मुल मोमिनीन! मुझे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अख़लाक़ (चरित्र) के बारे में कुछ बताएं।" इस पर हज़रत आयशा (रज़ि.) ने फ़रमाया, "क्या आप क़ुरआन नहीं पढ़ते?" मैंने कहा, "क्यों नहीं, ज़रूर पढ़ता हूं।" तो हज़रत आयशा (रज़ि.) ने फ़रमाया, "अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अख़लाक़ क़ुरआन करीम के बिल्कुल अनुरूप थे।"

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

"हम ने एक ऐसे नबी का दामन पकड़ा है जो ख़ुदा नुमा है"

संसार में ऐसे करोड़ों पवित्र स्वभाव लोग गुज़रे हैं और बाद में भी होंगे परन्तु हमने सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्कृष्ट उस मर्दे ख़ुदा को पाया है जिसका नाम है **मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व अलैहि वसल्लम**

اِنَّ اللہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا

(अल अहज़ाब-57)

उन क़ौमों के बुज़ुर्गों का ज़िक्र तो जाने दो जिनका हाल पवित्र क़ुर्आन में विस्तारपूर्वक वर्णन नहीं किया गया। केवल हम उन नबियों के बारे में अपनी राय व्यक्त करते हैं जिन का ज़िक्र (चर्चा) पवित्र क़ुर्आन में है। जैसे हज़रत मूसा, हज़रत दाऊद, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तथा अन्य अंबिया। तो हम ख़ुदा की क़सम खाकर कहते हैं कि यदि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम संसार में न आते और पवित्र क़ुर्आन न उतरता और वे बरकतें हम स्वयं अपनी आंखों से न देखते जो हमने देख लीं तो उन समस्त पहले नबियों की सच्चाई हम पर संदिग्ध रह जाती। क्योंकि केवल क़िस्सों से कोई वास्तविकता प्राप्त नहीं हो सकती तथा संभव है कि वे क़िस्से सही न हों और संभव है कि वे समस्त चमत्कार जो उनकी ओर संबद्ध किए गए हैं वे सब अतिशयोक्तियां हों क्योंकि अब उनका नामोनिशान नहीं बल्कि उन पहली पुस्तकों से तो ख़ुदा का पता भी नहीं लगता और निस्सन्देह समझ नहीं सकते कि ख़ुदा भी मनुष्य से **बातें करता है।** किन्तु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव से ये सब किस्से वास्तविकता के रूप में आ गए। अब हम न क़ाल (कहने) के तौर पर बल्कि हाल के तौर पर इस बात को अच्छी तरह समझते हैं कि ख़ुदा का वार्तालाप क्या चीज़ होता है और ख़ुदा के निशान किस प्रकार प्रकट होते हैं और किस प्रकार दुआएं स्वीकार हो जाती हैं तथा यह सब कुछ हमने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण (पैरवी) से पाया और जो कुछ किस्सों के तौर पर अन्य क़ौमें वर्णन करती हैं वह सब कुछ हमने देख लिया। इसलिए हमने एक ऐसे नबी का दामन पकड़ा है जो ख़ुदा को दिखाता है। किसी ने यह शे'र बहुत ही अच्छा कहा है-

मुहम्मद अरबी बादशाह हर **दो सरा**
करे है रूह क़ुदुस जिसके दर की दरबानी
उसे ख़ुदा तो नहीं कह सकूँ पै कहता हूँ
कि उसकी मर्तबा दानी में है **ख़ुदा दानी।**

हम किस मुँह से ख़ुदा का आभार व्यक्त करें जिसने हमें ऐसे नबी का अनुकरण दिया जो नेक लोगों की रूहों के लिए सूर्य है जैसे शरीरों के लिए सूर्य। वह अंधकार के समय प्रकट हुआ और संसार को अपने प्रकाश से प्रकाशमान कर दिया, वह न थका न शिथिल हुआ जब तक कि अरब के समस्त भाग को शिर्क से मुक्त न कर दिया। वह अपनी सच्चाई का स्वयं प्रमाण है क्योंकि उसका प्रकाश प्रत्येक युग में मौजूद है और उसका सच्चा अनुकरण मनुष्य को यों पवित्र करता है कि जैसे एक साफ़ और उज्जवल दरिया का पानी मैले कपड़े को। कौन सच्चे दिल से हमारे पास आया जिसने उस प्रकाश को न देखा और किस ने सही नीयत से उस दरवाजे को खटखटाया जो उसके लिए खोला न गया। किन्तु अफ़सोस! कि अधिकतर लोगों की यही आदत है कि वे घटिया जीवन को पसन्द कर लेते हैं और नहीं चाहते कि किसी प्रकार उनके अन्दर प्रवेश करे। (चश्म-ए-मा'रिफ़त, रूहानी खज़ाइन खंड 23 पृष्ठ 301-303)

★ ★ ★

सम्पादकीय

"क़ुरआन की तिलावत और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सर्वोत्तम आदर्श "

नमाज़ में क़ुरआन की तिलावत: क़ुरआन की तिलावत के सिलसिले में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुबारक उस्वा हमारे लिए बेहतरीन रहनुमा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कसरत से क़ुरआन की तिलावत करने वाले मुबारक शख्स थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नफ़्ल नमाज़ों की अदायगी के दौरान घंटों क़ियाम करते और क़ुरआन की तिलावत से अपने जिस्म और रूह को ताज़गी पहुंचाते। नमाज़े तहज्जुद में आप अक्सर सूरह बक़रह, सूरह आल-ए-इमरान और सूरह निसा की तिलावत फ़रमाते थे। अपनी उम्मत को भी इसकी तरग़ीब दिलाते हुए फ़रमाया:

"أعبدُ النّاس أكثرُهُمْ تلاوةً للقرآن" (कंज़ुल उम्माल, बाबुस साबिक़ फी तिलावत अल-क़ुरआन व फज़ाइल)

यानी, "लोगों में सबसे ज़्यादा इबादत गुज़ार वह शख्स है जो सबसे ज़्यादा क़ुरआन की तिलावत करता है।"

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"क्या तुममें से कोई यह पसंद करता है कि जब वह बाहर से अपने घर आए तो उसमें तीन मोटी-ताज़ी, गर्भवती ऊंटनियां पाए?" हमने अर्ज़ किया: "जी हां!" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"तीन आयतें जो तुममें से कोई अपनी नमाज़ में पढ़ता है, वह उसके लिए तीन भारी-भरकम और मोटी-ताज़ी ऊंटनियों से बेहतर हैं।" (सहीह मुस्लिम)

दूसरों से क़ुरआन सुनना : रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सहाबा की अच्छी आवाज़ों में अल्लाह के कलाम को सुनना बहुत पसंद था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) बयान करते हैं कि मुझसे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:"मुझे क़ुरआन सुनाओ।"मैंने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मैं आपको क़ुरआन सुनाऊं जबकि आप पर तो क़ुरआन नाज़िल हुआ है?"

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "إِنِّي أُحِبُّ أَنْ أَسْمَعَهُ مِنْ غَيْرِي" यानी, "मुझे किसी और से सुनना बहुत पसंद है।" (सहीह अल-बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइल अल-क़ुरआन)

दर्से क़ुरआन का सवाब : मस्जिदों में रोज़ाना होने वाले दर्से क़ुरआन की अहमियत और सवाब का अंदाज़ा इस हदीस से लगाया जा सकता है। हज़रत उक़बा बिन आमिर (रज़ि.) से रिवायत है कि जब हम सफ़्फ़ा में थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ लाए और फ़रमाया:

"तुममें से कौन चाहता है कि वह हर रोज़ सुबह बतहान या अकीक़ की तरफ़ जाए और वहां से बिना किसी गुनाह और रिश्तों को तोड़ने के, दो बड़ी-बड़ी कोहानों वाली ऊंटनियां ले आए?"

हमने अर्ज़ किया : "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हम सब ऐसा चाहते हैं।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "फिर तुममें से हर एक क्यों सुबह मस्जिद नहीं जाता ताकि अल्लाह की किताब से दो आयतें सीख ले या पढ़ ले, जो उसके लिए दो ऊंटनियों से बेहतर हैं। और तीन आयतें, जो तीन ऊंटनियों से बेहतर हैं। और चार आयतें, जो चार ऊंटनियों से बेहतर हैं। इसी तरह अपनी तादाद के मुताबिक़ ऊंटनियों

से बेहतर हैं।"(सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफिरीन व क़सरहा)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ऐ अहले क़ुरआन! क़ुरआन पढ़े बिना मत सोया करो। इसकी तिलावत रात और दिन में इस अंदाज़ से करो जैसे इसकी तिलावत का हक़ है। इसे फैलाओ, इसे ख़ुश-आवाज़ी से पढ़ो और इसके मवाद पर ग़ौर करो ताकि तुम कामयाबी हासिल करो।"

(मिश्कातुल मसाबिह, किताब अल-फ़ज़ाइल, किताब फ़ज़ाइल अल-क़ुरआन)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस (अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहिल अज़ीज़) फ़रमाते हैं:

"असल हक़ीक़त, असल चीज़ क़ुरआन करीम है। क़ुरआन करीम को पढ़ने की तरफ़ तवज्जोह देनी चाहिए और ख़ास तौर पर अंसार को इस तरफ़ ख़ास तवज्जोह देनी चाहिए। और न सिर्फ़ खुद तवज्जोह दें, बल्कि अपने बच्चों को भी इस तरफ़ तवज्जोह दिलाएं ताकि वे भी क़ुरआन करीम पढ़ें और अपनी हालतों को बेहतर बनाएं।"

(अल-फज़्ल रोज़नामा, 19 नवंबर 2024, पृष्ठ: 5, स्तंभ: 2)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें इन हिदायतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

(हाफ़िज़ सय्यद रसूल नियाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

निवेदन सदर-ए-मज्लिस

साल 2025 का कार्यक्रम : उस्वा-ए-रसूल

अताउल मुजीब लोन, सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

क़ुरआन और उस्वा-ए-रसूल अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा-ए-हसना को अपनाने की नसीहत करते हुए फ़रमाता है:

"لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ" (अल-अहज़ाब:22)

अनुवाद : "निश्चित ही तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है।"

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) का कथन :

"वह इंसान जिसने अपनी ज़ात, अपनी सिफ़त, अपने कार्यों और अपने आध्यात्मिक गुणों के ज़रिए इंसान-ए-कामिल का सर्वोत्तम आदर्श पेश किया वह मुबारक नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं।"(इत्तमाम-उल-हुज्जत, रूहानी ख़ज़ाइन, खंड 8, पृष्ठ 308)

सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदाहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का संदेश

सालाना इज्तिमा मजलिस अंसारुल्लाह भारत 2024 के लिए भेजे गए संदेश में, हज़ूर अनवर ने अंसार को नेक आदर्श प्रस्तुत करने की नसीहत दी:

"**अंसारुल्लाह की उम्र में इंसान अपनी परिपक्वता की अवस्था में होता है। इस उम्र में विशेष रूप से यह ध्यान देने की ज़रूरत है कि ख़िलाफ़त से उसका गहरा संबंध हो और अपनी संतानों के पालन-पोषण पर विशेष ध्यान दिया जाए। इसका सर्वोत्तम तरीका है कि उन्हें अपना नेक आदर्श प्रस्तुत करें। याद रखें, हमारे ही आदर्श हमारे बच्चों और समाज को सही दिशा देंगे।**" (सालाना इज्तेमा मज्लिस अन्सरुल्लाह भारत 2024 ई० के अवसर पर दिया गया सन्देश)

इस साल 2025 को "उस्वा-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" के रूप में मनाने का प्रस्ताव भिजवाने के बाद सय्यदना हुज़ूर अनवर ने अनुमति प्रदान की है।

सय्यदना हज़ूर अनवर की अनुमति के बाद, साल 2025 को "उस्वा-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" के नाम से मनाने और इसके तहत मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के सभी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया है।

मुख्य कार्यक्रम :

तरबियती इज्लास: साल 2025 में होने वाले महाना इज्लासों में "उस्वा-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" को मुख्य विषय रखा जाएगा।

★प्रत्येक महीने 12 पृष्ठों की मवाद मर्कज़ से भेजा जाएगा।

★सभी इज्तिमाओं को "उस्वा-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" के बैनर के साथ आयोजित किया जाएगा।

★इन इज्तिमाओं में हज़रत रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला जाएगा।

★सभी इज्तिमाओं के लिए एक समान बैनर डिज़ाइन केंद्र से भेजा जाएगा।

वार्षिक इज्तिमा के इल्मी मुकाबलों के विषय "उस्वा-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" से संबंधित विषयों पर आधारित होंगे।

★**पुस्तक अध्ययन:** साल 2025 में "हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अपनी तहरीरों की रू से" से अध्याय "हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" पढ़ने का निर्देश दिया गया है।

★**दिनी निसाब की परीक्षा:** परीक्षा के लिए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब की पुस्तक "चालीस जवाहर पारे" का चयन किया गया है।

★**सिरत-उन-नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कॉन्फ्रेंस:** भारत के विभिन्न ज़िलों में "सिरत-उन-नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" पर आधारित बड़ी कॉन्फ्रेंस आयोजित की जाएगी, जिनमें गैर-मुस्लिमों को भी आमंत्रित किया जाएगा।

★**सेमिनार** : सभी मज्लिस में "उस्वा-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" के विषय पर सेमिनार आयोजित किए जाएंगे। दुआ है कि अल्लाह हमें इन हिदायतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता करे। आमीन।

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546

Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

कुरआन की सच्चाइयाँ और आधुनिक आविष्कारों से उनकी पुष्टि

(भाषण, डॉक्टर हाफिज़ सालेह मुहम्मद अलाहदीन साहिब, जलसा सालाना क़ादियान.1992) (भाग-३)

आकाश की हकीकत

तारों के बीच जो वातावरण है, उसके बारे में भी कुरआन पाक ने बहुत महत्वपूर्ण प्रकाश डाला है। अल्लाह तआला फरमाता है:

"कुल्लुन फी फलकिन यस्बहून" (यासीन : 41, अंबिया: 34)

अर्थात, सब अपने-अपने कक्ष में तैर रहे हैं। "यस्बहून" (तैर रहे हैं) के शब्द बताते हैं कि आकाश ठोस नहीं, बल्कि एक सूक्ष्म प्रकार की चीज है।

हज़रत मसीह मौऊद (अ.स.) ने अपनी किताब "आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम" में आकाश की हकीकत पर विस्तृत प्रकाश डाला है। आपने लिखा:

"कुरआन करीम आसमानों को यूनानी दार्शनिकों की तरह ठोस परतों वाला नहीं मानता और न ही कुछ नासमझों के विचारों के अनुसार इसे खाली जगह मानता है। बल्कि आकाशीय अस्तित्व को अल्लाह ने बहुत ही सूक्ष्म और महीन माना है। कुरआन कहता है: 'कुल्लुन फी फलकिन यस्बहून,' यानी हर तारा अपने-अपने आकाश में जो उसकी दूरी है, उसमें तैर रहा है।" (आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी खज़ाइन, पृष्ठ 142, 148) तारों के बीच की जगह के बारे में हम उन्नीसवीं सदी तक कुछ नहीं जानते थे। यह अनुमान था कि कोई सूक्ष्म चीज़ होगी, जिसे 'ईथर' (Ether) कहा गया। बाद में प्रयोगों के ज़रिये यह जानने की कोशिश की गई कि हमारी पृथ्वी ईथर के सापेक्ष किस गति से चल रही है। लेकिन ईथर का कोई अस्तित्व सिद्ध नहीं हुआ। हां, इन प्रयोगों से एक लाभ हुआ कि इससे आइंस्टाइन (Einstein) का विशेष सापेक्षता सिद्धांत (Special Theory of Relativity) सामने आया। बीसवीं सदी में तारों के स्पेक्ट्रा (Spectra) का गहन अध्ययन करने पर हमें पता चला कि तारों के बीच एक सूक्ष्म प्रकार की गैस (Gas) मौजूद है और आकाश सिर्फ खाली स्थान नहीं है। फिर, 1965 में यह पता चला कि रेडियो किरणें (Radio Radiation), जिनका तापमान 3 डिग्री केल्विन है, पूरे ब्रह्मांड में फैली हुई हैं। इस अत्यंत सूक्ष्म तत्व का अध्ययन करके यह जाना जा सकता है कि हमारी पृथ्वी ब्रह्मांड में किस गति से चल रही है। इस प्रकार, कुरआन मजीद ने 1400 साल पहले जो कहा था:

"कुल्लुन फी फलकिन यस्बहून" उसकी पुष्टि बीसवीं सदी की विज्ञान ने कर दी है।

आकाश की ऊंचाई:

कुरआन मजीद ने कई स्थानों पर आकाश की ऊंचाई की ओर संकेत किया है, जैसे: "अल्लाहुल्लज़ी रफ़अस्समावाति बि-ग़ैरि अमदिन तरौन्हा" (अर-रअद: 3) अर्थ : "अल्लाह वह है, जिसने आकाशों को बिना उन खंभों के ऊंचा किया जिन्हें तुम देख सको।" (13/3) "वस्समा रफ़आहा ववज़अल मीज़ान"(अर-रहमान: 8)

अर्थ: "और उसने आकाश को ऊंचा किया और संतुलन का सिद्धांत स्थापित किया।"(55/8) "अन्तुम अशद्दु खलक़ं अमिस्समा बना: रफ़अ सम्कहा फसव्वाहा"(अन-नाज़िआत: 28, 29)

अर्थ: "क्या तुम्हारा पैदा होना कठिन है या आकाश का निर्माण? जिसे उसने बनाया और उसकी ऊंचाई को ऊंचा किया और उसे सुंदरता प्रदान की।" (79/28, 29)

"अफ़ला यन्दुरूना इलल इबिल कैफ़ खुलिक़त वा इलस्समा कैफ़ रुफ़िअत"(अल-गाशिया: 18, 19)

अर्थ: "क्या वे ऊंटों को नहीं देखते कि उन्हें कैसे बनाया गया? और आकाश को नहीं देखते कि उसे कैसे ऊंचा किया गया?" आधुनिक विज्ञान के खोज आकाश की ऊंचाई की पुष्टि करते हैं और हमें इसके विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं।

सात आकाश और धरती:

कुरआन मजीद ने सात आकाशों और धरती का भी उल्लेख किया है:

"अल्लाहुल्लज़ी खलक सबअस्समावातिं वमिनल-अर्दि मिस्लहुन" (अत-तलाक: 13)

अर्थ: "अल्लाह वह है, जिसने सात आकाश बनाए और धरती भी उनकी तरह।"

डॉ. मौरिस बुकेल (Dr. Maurice Bucaille) ने अपनी किताब "The Bible, The Quran, and Science" में लिखा है कि इस आयत से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारी पृथ्वी की तरह और भी धरती ब्रह्मांड में मौजूद हैं। (पृष्ठ 141)

रोशनी और अंधकार :

सूरत अन-नाज़िआत में आकाश की ऊंचाई के उल्लेख के साथ-साथ रोशनी और अंधकार का भी वर्णन किया गया है। कुरआन मजीद फरमाता है: "रफ़अ सम्कहा फसव्वाहा वअग़तश लैलहा वअख़राज दुहाहा" (अन-नाज़िआत: 29-30)

हज़रत मुसलिह मऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) इन आयतों की रोशनी में लिखते हैं:

"रफ़अ सम्कहा फसव्वाहा वअग़तश लैलहा वअख़राज दुहाहा" (अन-नाज़िआत: रुकू: 2)

अर्थात, आकाश को देखो कि हमने उसकी ऊंचाई को कितना बुलंद बनाया है और फिर उसे तमाम आवश्यक शक्तियां और गुण प्रदान किए हैं। हमने उसकी शक्तियों को दो प्रकार का बनाया है—एक छुपी हुई, जो रात की तरह अदृश्य हैं, और दूसरी स्पष्ट, जो दोपहर की तरह चमकदार हैं।

इस आयत में बताया गया है कि आकाशीय प्रणाली एक पूर्ण कानून पर आधारित है, जिसमें कुछ चीज़ें छिपी हुई हैं, जिनका ज्ञान सोच-विचार और गहराई से प्राप्त होता है, और कुछ चीज़ें स्पष्ट और खुली हुई हैं, जिन्हें साधारण आंखें भी देख सकती हैं। यह दोनों प्रकार के कानून प्रकृति के अध्ययन करने वालों के लिए स्पष्ट हैं। सूरज और चांद का उदाहरण लें उनके कुछ प्रभाव इतने स्पष्ट हैं कि अनपढ़ और साधारण लोग भी उन्हें समझ सकते हैं। वहीं, उनके कुछ कानून इतने छुपे हुए हैं कि हज़ारों वर्षों के अध्ययन के बाद उनके बहुत छोटे हिस्से को खगोलशास्त्र के विशेषज्ञ और वैज्ञानिक ही खोज पाए हैं। और इन पर अभी भी शोध जारी है। (तफ़्सीर कबीर, जिल्द 1, पृष्ठ 308)

एक अन्य स्थान पर कुरआन मजीद फरमाता है:

"अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी खलकस्समावाति वल-अर्दा वजअलज़-ज़ुलुमाति वन-नूर"(अल-अनआम: 2)

अर्थ: "हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने आकाशों और पृथ्वी को बनाया और अंधकार और रोशनी को भी बनाया।"(6:2)

आधुनिक युग में ब्रह्मांड के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हुई है कि एक तरफ ब्रह्मांड में कई चमकते हुए पिंड पाए जाते हैं, जैसे कि चमकते तारे, तारों के समूह (Clusters)।

1963 में ऐसी अत्यधिक ऊर्जा देने वाले आकाशीय पिंडों की खोज हुई जो आकार में तारों की तरह छोटे हैं लेकिन ऊर्जा में गैलेक्सी (Galaxy) के बराबर हैं। इन आकाशीय पिंडों को क्वेसर्स (Quasars) कहा जाता है। दूसरी ओर, यह पता चला कि ब्रह्मांड में बहुत सा ऐसा पदार्थ पाया जाता है जो न तो रोशनी से, न एक्स-रे (X-Rays) से, न गामा किरणों (G Rays) से और न ही रेडियो तरंगों से देखा जा सकता है। यह किसी भी प्रकार की किरणें उत्सर्जित नहीं करता। केवल गुरुत्वाकर्षण बल (Gravity) के प्रभावों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि यह पदार्थ मौजूद है। इस पदार्थ को हिडन मैटर (Hidden Matter) यानी छुपा हुआ पदार्थ कहा जाता है। इसकी वास्तविकता क्या है, यह फिलहाल ज्ञात नहीं है। इस प्रकार, पदार्थ के दो प्रकार माने जाते हैं: वह पदार्थ जो रोशनी या अन्य किरणें उत्सर्जित करता है, जिसे ल्यूमिनस मैटर (Luminous Matter) यानी चमकता हुआ पदार्थ कहते हैं। वह पदार्थ जो किसी प्रकार की किरणें उत्सर्जित नहीं करता, जिसे हिडन मैटर यानी छुपा हुआ या अदृश्य पदार्थ कहते हैं। वर्तमान अध्ययन से यह पता चलता है कि ब्रह्मांड में छुपा हुआ पदार्थ बहुत अधिक है। इसके मुकाबले में चमकते पदार्थ की मात्रा बहुत कम है। छुपे हुए पदार्थ की वास्तविकता क्या है, यह आधुनिक विज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है। अंततः, कुरआन मजीद में जो यह कहा गया:

"जअलज़-ज़ुलुमाति वन-नूर"

और

"वअग़तश लैलहा वअख़राज दुहाहा"

आधुनिक विज्ञान की खोजें इन आयतों की व्याख्या प्रस्तुत करती हैं।

कायनात में फना (विनाश) का सिलसिला:

आकाशीय पिंडों (Celestial Bodies) के बारे में अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में यह बात बताई है

कि ये पिंड, जो अपने-अपने कक्ष में घूम रहे हैं, केवल एक निश्चित समय तक ही चलेंगे। यह हमेशा चलने वाली चीज़ें नहीं हैं। जैसा कि कुरआन में फरमाया गया: "कुल्लुन यज्री लि-अजलिन मुसम्मा" (अर-रअद: 3, फातिर: 14, अज़-ज़ुमर: 6) अर्थात, "हर एक निश्चित समय तक चल रहा है।"

आधुनिक विज्ञान ने कुरआन मजीद की इस सच्चाई की भी पुष्टि की है। हम तो यह देखते ही हैं कि इंसान पैदा होता है, बड़ा होता है, फिर उस पर बुढ़ापे का दौर आता है और अंतत: वह मर जाता है। यही प्रक्रिया जानवरों और पौधों पर भी लागू होती है। लेकिन अब विज्ञान ने यह भी साबित किया है कि पृथ्वी और आकाशीय पिंडों पर भी मृत्यु (विनाश) आएगी।

पृथ्वी और सूर्य की उम्र

पृथ्वी की उम्र का अनुमान उसकी चट्टानों के विश्लेषण से लगाया जा सकता है, जो लगभग 4.5 अरब वर्ष है। सूर्य और सौर मंडल की औसत उम्र 5 अरब वर्ष मानी जाती है।

सूर्य में हाइड्रोजन का न्यूक्लियर रिएक्शन हेलियम में बदलता जा रहा है। यही प्रक्रिया उसकी गर्मी और रोशनी बनाए रखने का कारण है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अगले 5 अरब वर्षों में सूर्य की हाइड्रोजन समाप्त हो जाएगी। इसके बाद सूर्य की ज़िंदगी एक नए चरण में प्रवेश करेगी:

सूर्य का आकार बहुत बड़ा हो जाएगा, और उसकी सीमा बुध (Mercury) ग्रह तक पहुंच जाएगी। अत्यधिक गर्मी के कारण पृथ्वी के महासागर उबलने लगेंगे। इसके बाद, सूर्य सिकुड़ने लगेगा और अंतत: उसका आकार एक ग्रह जितना छोटा हो जाएगा। उस समय सूर्य की रोशनी बहुत कम हो जाएगी, और इस प्रकार के तारे को व्हाइट ड्वार्फ (White Dwarf) कहा जाता है। यह सूर्य के जीवन के वृद्धावस्था का दौर होगा। (अधिक विस्तार के लिए देखें: Explorers of the Universe by Abell)

तारों की उम्र और रंग

सूर्य हमें पीले रंग का दिखाई देता है। तारों के विभिन्न रंग होते हैं, जो उनकी उम्र और तापमान के अनुसार भिन्न होते हैं। लेकिन यह बात तय है कि ब्रह्मांड में जितने भी तारे इस समय अपने-अपने कक्ष में घूम रहे हैं, वे सभी सीमित उम्र के हैं।

कुरआन और विज्ञान

कुरआन मजीद में जो यह फरमाया गया: "कुल्लुन यज्री लि-अजलिन मुसम्मा" (हर एक निश्चित समय तक चल रहा है।)

आधुनिक विज्ञान की खोजें इस कुरआनी तथ्य की पूरी तरह से पुष्टि करती हैं।

अत: ब्रह्मांड का हर घटक एक समय सीमा के अधीन है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण कुरआन मजीद की अनंत सत्यता को प्रमाणित करता है।

पैदाइश-ए-कायनात और आग़ाज़-ए-ज़िंदगी (ब्रह्मांड की उत्पत्ति और जीवन की शुरुआत): क़ुरआन मजीद में ब्रह्मांड की उत्पत्ति और जीवन की शुरुआत के बारे में फ़रमाया गया :

"अवलम यरल्लज़ीना कफ़रू अन्नस्समावाति वल-अर्द क़ानता रत्कन फ़फतक़्नाहुमा वजअल्ना मिनल-माई कुल्ल शैइं हय्य, अफला युमिनून?"(सूरह अल-अंबिया: 31)

अर्थ : "क्या उन्होंने नहीं देखा, जिन्होंने कुफ़्र किया कि आसमान और ज़मीन एक साथ जुड़े हुए थे, फिर हमने उन्हें अलग कर दिया, और हर जीवित चीज़ को पानी से पैदा किया? तो क्या वे ईमान नहीं लाएंगे?"

क़ुरआनी दृष्टिकोण और विज्ञान इस आयत में ज़िक्र किया गया है कि एक ऐसा समय था जब ज़मीन और आसमान एक साथ जुड़े हुए थे। क़ुरआन के इस बयान की आधुनिक विज्ञान ने भी पुष्टि की है। वैज्ञानिकों का कहना है कि सूरज, चांद, ज़मीन और दूसरे ग्रह सभी एक ही नेब्यूला (Nebula) के रूप में थे। बाद में यह सब अलग-अलग गोलों (स्फीयर्स) में तब्दील हो गए। यह सिद्धांत आधुनिक खगोल विज्ञान में बिग बैंग थ्योरी और नेबुलर हाइपोथेसिस से मेल खाता है।

आयत में "दुख़ान" का ज़िक्र एक दूसरी आयत में अल्लाह तआला ने फरमाया:

"सुम्म अस्तवा इलस्समाइ वहिया दुख़ानुन" (सूरह हमिम अस-सज्दा: 12)

अर्थ : "फिर अल्लाह आसमान की तरफ़ मुतवज्जे हुआ और वह (आसमान) महज़ एक धुएं (गैस या कुहरे) की तरह था।" (भाग 4 फ़रवरी की पत्रिका में)

★ ★ ★